अध्याय 12

याजकीय सेवकाई तथा शहरपनाह का समर्पण

नहेम्याह 11 मुख्यतः उनकी सूचियाँ हैं जो शहरपनाह के पुनः निर्माण के पश्चात यरूशलेम में रह रहे थे - लोगों के अगुवे, याजक, और लेवी। नहेम्याह 12:1-26 उन याजकों और लेवियों की सूची उपलब्ध करवाता है, दोनों, जो जरुब्बाबेल के लौटने तथा बाद की तिथियों, के भी थे। इस वॉल्. का एक संभावित उद्देश्य था याजकीय सेवकाई के बने रहने को दिखाना। वे जो नहेम्याह के दिनों में याजकों और लेवियों की सेवा करते थे उनका संबंध बाबुल से लौटने वालों के साथ दिखाया गया है (देखें 12:1, 26)। यह अध्याय शहरपनाह के पुनः निर्माण की कहानी को भी पूर्ण करता है उस आनंदमय समारोह का वर्णन करने के द्वारा जो शहरपनाह के समर्पण के समय मनाया गया (12:27-43)। इसका समापन होता है यह बताने के द्वारा कि किस प्रकार याजकों और लेवियों की आवश्यकताएँ लोगों की भेंटों और दशमांशों के द्वारा पूरी की गईं, जिन्हें मंदिर के भण्डार में रखा गया (12:44-47)।

इन दोनों विषयों का विलय - याजकों और लेवियों की सेवकाई के महत्व तथा पुनः निर्माण की गई शहरपनाह का समर्पण - शहरपनाह के पुनः निर्माण के कारण की स्मृति का कार्य करता है। यह मात्र सुन्दर दिखने के लिए की गई योजना नहीं था, वरन, शहरपनाह का पुनः निर्माण इसलिए किया गया जिससे परमेश्वर के लोग उसकी उपासना और उसकी व्यवस्था का पालन सुरक्षित रहकर कर सकें। अध्याय 12 का ध्यान निर्माण करने वालों तथा योजना के प्रहरियों से मुड़कर आराधना के अगुवों, तथा पत्थरों द्वारा निर्माण से भजनों द्वारा परमेश्वर की स्तुति करने की ओर आता है।

याजकों और लेवियों की सेवकाई (12:1-26)

[1]जो याजक और लेवीय शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल और येशू के संग यरूशलेम को गए थे, वे ये थे: सरायाह, यिर्मयाह, एज्रा, [2]अमर्याह, मल्लूक, हत्तूश, [3]शकन्याह, रहूम, मरेमोत, [4]इद्दो, गिन्नतोई, अबिय्याह, [5]मीय्यामीन, माद्याह, बिलगा, [6]शमायाह, योआरीब, यदायाह, [7]सल्लू, आमोक, हिल्कियाह और यदायाह। येशू के दिनों में याजकों और उनके भाइयों के मुख्य पुरुष, ये ही थे।

[8]फिर ये लेवीय गए: येशू, बिन्नूई, कदमीएल, शेरेब्याह, यहूदा और वह मत्तन्याह जो अपने भाइयों समेत धन्यवाद के काम पर ठहराया गया था। [9]उनके भाई बकबुक्याह और उन्नो उनके सामने अपनी सेवकाई में लगे रहते थे। [10]येशू से योयाकीम उत्पन्न हुआ और योयाकीम से एल्याशीब और एल्याशीब से योयादा, [11]और योयादा से योनातान और योनातान से यद्दू उत्पन्न हुआ।

[12]योयाकीम के दिनों में ये याजक अपने अपने पितरों के घराने के मुख्य पुरुष थे, अर्थात् शरायाह का तो मरायाह; यिर्मयाह का हनन्याह; [13]एज्रा का मशुल्लाम; अमर्याह का यहोहानान; [14]मल्लूकी का योनातान; शबन्याह का योसेप; [15]हारीम का अदना; मरायोत का हेलकै; [16]इद्दो का जकर्याह; गिन्नतोन का मशुल्लाम; [17]अबिय्याह का जिक्री; मिन्यामीन के मोअद्याह का पिलतै; [18]बिलगा का शम्मू; शमायाह का यहोनातान; [19]योयारीब का मत्तनै; यदायाह का उज्जी; [20]सल्लै का कल्लै; आमोक का एबेर; [21]हिल्कियाह का हशब्याह; और यदायाह का नतनेल।

[22]एल्याशीब, योयादा, योहानान और यद्दू के दिनों में लेवीय पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों के नाम लिखे जाते थे, और दारा फ़ारसी के राज्य में याजकों के भी नाम लिखे जाते थे। [23]जो लेवीय पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष थे, उनके नाम एल्याशीब के पुत्र योहानान के दिनों तक इतिहास की पुस्तक में लिखे जाते थे। [24]लेवियों के मुख्य पुरुष ये थे: अर्थात् हशब्याह, शेरेब्याह और कदमीएल का पुत्र येशू; और उनके सामने उनके भाई परमेश्वर के भक्त दाऊद की आज्ञा के अनुसार आमने-सामने स्तुति और धन्यवाद करने पर नियुक्त थे। [25]मत्तन्याह, बकबुक्याह, ओबद्याह, मशुल्लाम, तल्मोन और अक्कूब फाटकों के पास के भण्डारों का पहरा देनेवाले द्वारपाल थे। [26]योयाकीम के दिनों में जो योसादाक का पोता और येशू का पुत्र था, और नहेम्याह अधिपति और एज्रा याजक और शास्त्री के दिनों में ये ही थे।

इस वॉल्. को सात अंशों में बाँटा जा सकता है। प्रत्येक, उन याजकों तथा लेवियों के विषय, जो यहूदा में रहते थे, हमारे ज्ञान को बढ़ाता है।

आयतें 1-7. *परिचय.* वॉल्. का आरंभ उनके नामों के साथ होता है **जो याजक और लेवीय जरुब्बाबेल के संग गए थे**, तथा जिन्होंने मंदिर के पुनः निर्माण के पश्चात सेवकाई की थी। यह नहेम्याह की सेवकाई से लगभग सौ वर्ष पहले हुआ था।

याजक जो जरुब्बाबेल और यीशु के साथ आए। पहले जिस समूह का नाम दिया गया वे **येशू के दिनों में याजकों और उनके भाइयों[1] के मुख्य मुख्य पुरुष थे** (12:7)। "येशु" जरुब्बाबेल के समय में महायाजक था (देखें एज्रा 3:2, 8)। बाईस याजकों का नाम दिया गया है; वे उस समय के याजकीय परिवारों के "मुख्य पुरुष" थे। इनमें से दो याजक **यिर्मयाह** तथा **एज्रा** थे (12:1)। परन्तु ये वे नहीं थे जिनके नामों पर पुराने नियम की दो पुस्तकों को नाम दिया गया है।

दाऊद के राज्य के समय में याजकों को चौबीस परिवारों में बाँटा गया था

(1 इतिहास 25:1-19)। बाद के यहूदी मत में चौबीस याजकीय परिवार भी थे।[2]

आयतें 8, 9. *जरुब्बाबेल और येशू के साथ आने वाले लेवी।* इन सूचियों में, जैसे कि अन्यों में, लेवियों की संख्या याजकों से कम है, जो एज्रा के बाबुल से लौटने के समय में कही गई लेवियों की संख्या की घटी को प्रतिबिंबित करता है (एज्रा 8:15-20)। यहाँ आठ लेवियों के नाम दिए गए हैं। इनमें से एक **मत्तन्याह** को उसके **भाइयों समेत धन्यवाद के काम पर ठहराया गया था**। दूसरे शब्दों में, वह आराधना का मुख्य अगुवा था। दो अन्य लेवीय, **बकबुक्याह और उन्नो** तथा **उनके भाई, उनके सामने अपनी अपनी सेवकाई में लगे रहते थे**। उनकी स्थिति प्रत्युत्तर गीत गाने की पद्धति का सुझाव देती है, जिसमें एक समूह गाता है, और फिर उनके समक्ष का दूसरा समूह गा कर उन्हें प्रत्युत्तर देता है।

आयतें 10, 11. *महायाजकों की एक वंशावली.* इस बिंदु पर आकर, लेखक ने जरुब्बाबेल के समय से लेकर, संभवतः उस समय तक की, जब वह लिख रहा था, वंशावली का ब्यौरा दिया। उसने छः पीढ़ियों को सम्मिलित किया: **येशू - योयाकीम - एल्याशीब - योयादा - योनातान - यद्दू**। इस वंशावली का उद्देश्य वर्तमान पीढ़ी (नहेम्याह के समय के यहूदी) का बंधुवाई से लौटकर आए यहूदियों के साथ, और इसलिए, प्राचीन इस्राएल के साथ भी, संबंध दिखाना प्रतीत होता है। इस वंशावली ने दिखाया कि जो याजकों का कार्य कर रहे थे वे हारून और उसके वंशजों के पद-चिन्हों पर वैध रीति से चल रहे थे।

इन आयतों में दो महायाजकों का विशेष ध्यान किया गया है। इनमें से पहला, "योनातान" को वही महायाजक पहचाना जाना चाहिए जिसे 12:22, 23 में "योहानान" कहा गया है, और एज्रा 10:6 में "योहानान।"[3]

दूसरा, "यद्दू" बहुत चर्चा का विषय रहा है, उसकी महायाजकीय सेवकाई की तिथि से संबंधित प्रश्नों के कारण। जोसेफस के अनुसार, "यद्दू" नामक एक याजक सिकंदर महान से मिला था जब वह यूनानी विजेता लगभग 332 ई.पू. में यरूशलेम की ओर आया था।[4] कुछ व्याख्याकर्ता ज़ोर देते हैं कि, यदि ये दोनों यद्दू एक ही व्यक्ति थे, तो फिर एज्रा और नहेम्याह की पुस्तकें 330 ई.पू. के बाद ही पूर्ण हुई हैं। उनका तर्क है कि 12:22 में दी गई चार याजकों की सूची का अन्त "योहानान और यद्दू" के साथ (इब्रानी में भी तथा अंग्रेज़ी में भी) होता है। क्योंकि एक ही "और" की आवश्यकता है, इसलिए उनका सुझाव है कि "और यद्दू" को बाद में किसी संपादक ने जोड़ा है।

यह संभव है कि यदि नहेम्याह के समय में यद्दू आयु में बहुत छोटा था, तो उसका सामना सिकंदर से बड़ी आयु में होना संभव है। किन्तु जोसेफस द्वारा उल्लेखित यद्दू संभवतः नहेम्याह 12 का यद्दू नहीं था। पुराने नियम के समय में परिवारों के नामों को दोहराया जाना सामान्य था, जैसा कि आज भी है। यद्यपि हम निश्चित तो नहीं हो सकते हैं, फिर भी यह बहुत संभव है कि जो यद्दू सिकंदर महान से मिला था वह उसका वंशज था जिसका उल्लेख इस अध्याय में आया है। कुछ यह विचार भी रखते हैं कि जोसेफस बिलकुल गलत था। इसलिए, यह दावा कि यद्दू का नाम 330 ई.पू. के बाद के किसी संपादक ने जोड़ दिया असंभावित

है।[5] सूची के सम्मिलित किए जाने के संभावित उद्देश्य को स्वीकार करते हुए, यह अधिक संभव लगता है कि यद्दू नहेम्याह का समकालीन था (यद्यपि यह आवश्यक नहीं कि नहेम्याह के समय में महायाजक था)। यह विश्वास करने का कई वैध कारण नहीं है कि पुस्तक 330 ई.पू. के बाद पूर्ण हुई थी।

आयतें 12-21. *याजक और पितरों के घरानों के मुखिया जिन्होंने येशु के समय के बाद सेवकाई की।* यह दिखाने के लिए कि उसके दिनों के याजकों के पास उस सेवकाई का अधिकार था, लेखक ने अपने समय के याजकों का संबंध उनके साथ दिखाया जो बाबुल से आए थे (12:1-7)। उसने फिर से जरुब्बाबेल और येशु के समय के याजकों के नाम दिए; और प्रत्येक के बाद, उसने उस वर्तमान याजक का नाम दिया जो उस याजक का वंशज था।

दोनों सूचियों में थोड़ा सा अन्तर दिखता है जब येशु के समय से याजकों की दोनों सूचियों का निरीक्षण किया जाता है। जो 12:12-21 की सूची है उसमें इक्कीस नाम हैं; "हत्तूश" के नाम को (12:2; पहली सूची में छठवाँ नाम) हटा दिया गया है। दोनों सूचियों में वर्तनी के अन्तर भी दिखाई देते हैं:

"मल्लूक" (12:2) अब हो गया है **मल्लूकी** (12:14);
"शकन्याह" (12:3) अब हो गया है **शबन्याह** (12:14);
"रहूम" (12:3) अब हो गया है **हारीम** (12:15);
"मरेमोत" (12:3) अब हो गया है **मरायोत** (12:15);
"गिन्नतोई" (12:4) अब हो गया है **गिन्नतोन** (12:16);
"मीय्यामीन" (12:5) अब है **मिन्यामीन** (12:17);
"माद्याह" (12:5) अब हो गया है **मोअद्याह** (12:17);
"सल्लू" (12:7) अब है **सल्लै** (12:20).[6]

ऐसा प्रतीत होता है कि मीय्यामीन/ मिन्यामीन के समकालीन वंशज का नाम छोड़ दिया गया है (12:17)। अति सतर्कता रखते हुए बनाई गए प्रतिलिपियों के होते हुए भी, शताब्दियों के साथ शास्त्रियों द्वारा वर्तनी में त्रुटियाँ हो ही गईं; परन्तु ये गौण विसंगतियाँ लेख के अर्थ अथवा महत्व पर प्रभाव नहीं डालती हैं।[7] वॉल्. फिर भी एज्रा और नहेम्याह के दिनों के याजकों की जरुब्बाबेल के समय के याजकों के साथ की निरंतरता की पुष्टि करता है।

आयतें 22, 23. *लेवियों के विषय जानकारी के स्रोत।* लेखक याजकों के नामों की सूची बनाने से प्रमुख लेवियों के नाम देने की ओर मुड़ा। उसने अपने स्रोत का नाम बताने के साथ आरंभ किया: **पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों के नाम** जहाँ लिखे थे (याजकों के साथ) जब **एल्याशीब, योयादा, योहानान और यद्दू** महायाजक थे **दारा फ़ारसी** के दिनों में।

इस संदर्भ में "दारा फारसी" की पहचान विवादित है। कुछ इसे दारा III कोडोमैन्स (336-331 ई.पू.), का उल्लेख मानते हैं, पुस्तक के अंतिम एड. के लिखे जाने की बहुत बाद की तिथि को मानते हुए। अन्य, जिनमें अधिकांश अनुदारपंथी

व्याख्याकर्ता सम्मिलित हैं, विश्वास करते हैं कि यह दारा II नोथस (423-404 ई.पू.) था। एच. जी. एम. विलियमसन का विचार था कि अभिप्राय दारा I से है। उन्होंने कहा "'दारा फारसी' दारा I को संबोधित करने की विधि है जिससे उसे दारा मादी से भिन्न समझा जा सके।"[8] यदि विलियमसन सही हैं, तो फिर विचार यह है कि याजकों और लेवियों का पंजीकरण "दारा फारसी" के दिनों में आरंभ हुआ और वर्तमान तक होता रहा या वर्तमान तक प्रासंगिक रहा। परन्तु पवित्र-शास्त्र के कई अनुवाद संकेत करते हैं कि "दारा फारसी" पंजीकरण का अन्त था न कि आरंभ (देखें NRSV; REB; NAB; NJB)। यदि यह सही है, तो बहुत अधिक संभावना है कि यह व्यक्ति दारा II नोथस (423-404 ई.पू.) था।

नामों को **इतिहास की पुस्तक** या "वृतांतों" (NIV)[9] में लिखा जाता था, और **एल्याशीब के पुत्र योहानान के दिनों तक** उनको नवीनीकृत करके रखा जाता रहा। यद्यपि "योहानान" को "एल्याशीब का पुत्र" कहा गया है, वास्तव में वह "एल्याशीब का पोता था।"[10] आयतें 10 और 11 कहती हैं कि "एल्याशीब योयादा का पिता हुआ, और योयादा योनातान [योहानान] का पिता हुआ।" इसलिए यहाँ "पुत्र" का अर्थ "पोता" या "वंशज" समझा जाना चाहिए।

आयतें 24-26. *येशु के समय के पश्चात सेवा करने वाले लेवियों के पारिवारिक अगुवे।* लेखक ने अपनी खोज के परिणामों को सूचीबद्ध करना आरंभ किया, उसने **लेवियों** के परिवारों के अगुवों के नाम दिए। यहाँ उनमें से दस के नाम दिए गए हैं। इनमें से कुछ नाम बाबुल से आने वाले लेवियों की सूची में भी मिलते हैं। इस तथ्य का एक स्पष्टीकरण है कि इन आयतों में दिए गए व्यक्तियों को उनके पितरों के नामों के अनुसार नाम दिए गए। एक अन्य संभावना है कि जो नाम दिए गए वे पारिवारिक नाम थे और सूची का उद्देश्य यह दिखाना था कि जरुब्बाबिल के दिनों से लेकर नहेम्याह के दिनों तक लेवियों के वही परिवार सेवकाई करते रहे थे।

लेख फिर से यह संकेत देता है कि कुछ लेवी मंदिर की सेवा में प्रत्युत्तरगान करते थे: **उनके सामने उनके भाई** थे। वे **परमेश्वर के भक्त दाऊद** के "अध्यादेश" (NJPSV) या "आज्ञा" (NRSV) का पालन कर रहे थे (12:24; देखें 1 इतिहास 16:4-6; 23:27-31; 25:1-8; 2 इतिहास 8:14)।

नहेम्याह 12 में दाऊद का नाम प्रमुख है। हम पढ़ते हैं "परमेश्वर का भक्त दाऊद" (12:24, 36); "दाऊदपुर" (12:37); "दाऊद की आज्ञा के अनुसार" (12:45); तथा "दाऊद के दिनों में" (12:46)। लेखक ने बल दिया कि उस अवसर पर जो हो रहा था वह दाऊद के महिमित राज्य को स्मरण करवाता था। उसका "परमेश्वर का भक्त" कहलाना (देखें 12:36; 2 इतिहास 8:14) असाधारण है क्योंकि यह उपाधि सामान्यतः उन्हें दी जाती थी जो भविष्यद्वक्ता की सेवकाई करते थे। संभवतः यहाँ इसका प्रयोग यह सुझाव देता है कि लेखक दाऊद को, एक प्रकार से, परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता समझता था (देखें प्रेरितों 2:29, 30)।

मत्तन्याह, **बकबुक्याह**, और **ओबद्याह** ("अब्दा") को पहले 11:17 में गायकों के मुखिया कहकर सूचीबद्ध किया गया है। एफ. चार्ल्स फैनशैम का विचार था कि

उन्हें 12:25 में भी उसी श्रेणी में होना चाहिए; उनका सुझाव था कि "ओबद्याह" के बाद शब्द "गायक थे" जोड़े जाने चाहिएँ।[11] डेरेक किडनर का प्रस्ताव थी कि यदि 12:24 में उनका नाम नहीं है तो ये तीनों लेवी, गायक और **द्वारपाल**, दोनों हो सकते थे।[12] तीन अन्य जो लेवीय थे तथा जो "द्वारपाल" की सेवा करते थे, वे थे **मशुल्लाम**, **तल्मोन** और **अक्कूब**। "अक्कूब" और "तल्मोन" को 11:19 में द्वारपाल भी बताया गया है। उनका कार्य था **फाटकों के पास के भण्डारों का पहरा** देना (12:25)।

इसके बाद वॉल्. स्पष्ट करता है कि जिनका नाम लिया गया उनकी **सेवा योयाकीम के दिनों** से लेकर **नहेम्याह ... और एज्रा के दिनों तक** थी। नहेम्याह का नाम एज्रा से पहले लिया गया क्योंकि वह लोगों का आधिकारिक अगुवा, प्रांत का अधिपति था (12:26)।

शहरपनाह का समर्पण (12:27-43)

अध्याय के इस वॉल्. में एक बहुत महत्वपूर्ण घटना हुई - यरूशलेम की पुनः निर्मित शहरपनाह का समर्पण। लेख फिर से प्रथम-व्यक्ति प्रयोग पर आ जाता है ("मैं"; 12:31, 38, 40)।

तैयारी (12:27-30)

[27]यरूशलेम की शहरपनाह की प्रतिष्ठा के समय लेवीय अपने सब स्थानों में ढूँढ़े गए कि यरूशलेम को पहुँचाए जाएँ, जिससे आनन्द और धन्यवाद करके और झाँझ, सारंगी और वीणा बजाकर, और गाकर उसकी प्रतिष्ठा करें। [28]तो गवैयों के सन्तान यरूशलेम के चारों ओर के देश से और नतोपातियों के गाँवों से, [29]और बेतगिलगाल से, और गेबा और अज्माबेत के खेतों से इकट्ठे हुए; क्योंकि गवैयों ने यरूशलेम के आसपास गाँव बसा लिये थे। [30]तब याजकों और लेवियों ने अपने अपने को शुद्ध किया; और उन्होंने प्रजा को, और फाटकों और शहरपनाह को भी शुद्ध किया।

लोगों ने ऐसा समारोह क्यों मनाया? निःसंदेह वे इससे प्रोत्साहित हुए होंगे। यह कहा जा सकता है कि "समर्पण का कार्य शारीरिक कम और आत्मिक तथा मनोवैज्ञानिक अधिक था। शहरपनाह की सबसे महत्वपूर्ण बात भी मनोवैज्ञानिक थी, क्योंकि इससे हताश लोगों को एक सफलता तथा प्रोत्साहन मिलता था।"[13] इसके अतिरिक्त, ऐसे ही अन्य योजनाओं - सुलैमान का मंदिर बनाया जाना और दूसरे मंदिर के बनाए जाने - के पूरे होने का आनंदमय समर्पण द्वारा भी समारोह मनाया गया था (1 राजा. 8; एज्रा 6:16-18)। इस उपलब्धि को भी इसी प्रकार स्मरण किया जाना उचित था। इन सभी सेवाओं का बल धन्यवादी होने पर था - परमेश्वर ने जो अपने लोगों में होकर उनके लिए किया था, उसके लिए उसकी महिमा करना।

प्रत्यक्षतः शहरपनाह के बनाए जाने के पूरा होने को, जिसे 6:15 में दर्ज किया गया है, कुछ समय बीत चुका था।[14] प्रतीत होता है कि यह समय वाचा के पुनः नवीनीकरण (अध्याय 8-10) तथा यरूशलेम की आबादी की पुनःस्थापना में लगाया गया था (अध्याय 11)। क्योंकि ये कार्य भी पूरे कर लिए गए थे, इसलिए अब यह उत्सव मनाने का समय था!

आयतें 27-30. याजकों ने समर्पण समारोह की तैयारी दो प्रकार से की। 12:27-29 में, **वे** - संभवतः यहूदियों के अगुवे, और संभवतः नहेम्याह और एज्रा विशेषतः (12:26) - **लेवियों** को चारों ओर के **गाँवों** से, जहाँ वे रहते थे, **यरूशलेम** लेकर आए। उनमें से कुछ नेतोपाह में रहते थे, जो बैतलहम के निकट का स्थान था (देखें 7:26; एज्रा 2:21, 22)।[15] **गवैयों के सन्तान** पवित्र शहर में आए **जिससे आनन्द और धन्यवाद करके** उत्सव मनाने में लोगों की सहायता करें। वे ऐसा **गाकर** तथा संगीत वाद्यों के द्वारा करते।

साथ ही, **याजकों और लेवियों ने अपने अपने को शुद्ध किया; और उन्होंने प्रजा को, और फाटकों और शहरपनाह को भी शुद्ध किया** (12:30)। वे दोनों ही, जिनका समर्पण होना था तथा जिन्हें समर्पण करना था, उन्हें शुद्ध, या पवित्र किया जाना था। शुद्ध करने की रीतियाँ पवित्र अनुष्ठान से पहले होनी थीं (देखें निर्गमन 19:10-15; एज्रा 6:20)। जोसेफ ब्लेनकिनसौप के अनुसार, "इसमें यौन संयम रखना, स्वच्छ वस्त्र पहनना, और बलिदान चढ़ाना सम्मिलित हो सकते थे। हमें यह नहीं बताया गया है कि इसमें क्या-क्या किया गया; हो सकता है कि शहरपनाह और द्वारों पर जल छिड़का गया हो (देखें गिनती 19:18; यहेज. 36:25)।"[16]

जलूस (12:31-39)

[31]तब मैं ने यहूदी हाकिमों को शहरपनाह पर चढ़ाकर दो बड़े दल ठहराए, जो धन्यवाद करते हुए धूमधाम के साथ चलते थे। इनमें से एक दल तो दक्षिण की ओर, अर्थात् कूड़ाफाटक की ओर शहरपनाह के ऊपर ऊपर से चला; [32]और उसके पीछे पीछे ये चले, अर्थात् होशायाह, और यहूदा के आधे हाकिम, [33]और अजर्याह, एज्रा, मशुल्लाम, [34]यहूदा, बिन्यामीन, शमायाह, और यिर्मयाह, [35]और याजकों के कितने पुत्र तुरहियाँ लिये हुए: अर्थात् जकर्याह जो योहानान का पुत्र था, यह शमायाह का पुत्र, यह मत्तन्याह का पुत्र, यह मीकायाह का पुत्र, यह जक्कूर का पुत्र, यह आसाप का पुत्र था; [36]और उसके भाई शमायाह, अजरेल, मिललै, गिललै, माऐ, नतनेल, यहूदा और हनानी परमेश्वर के भक्त दाऊद के बाजे लिये हुए थे; और उनके आगे आगे एज्रा शास्त्री चला। [37]ये सोताफाटक से हो सीधे दाऊदपुर की सीढ़ी पर चढ़, शहरपनाह की ऊँचाई पर से चलकर, दाऊद के भवन के ऊपर से होकर, पूरब की ओर जलफाटक तक पहुँचे। [38]धन्यवाद करने और धूमधाम से चलनेवालों का दूसरा दल, और उनके पीछे पीछे मैं, और आधे लोग उनसे मिलने को शहरपनाह के ऊपर ऊपर से भट्ठों के गुम्मट के पास से चौड़ी शहरपनाह तक, [39]और एप्रैम के फाटक और पुराने

फाटक, और मछलीफाटक, और हननेल के गुम्मट, और हम्मेआ नामक गुम्मट के पास से होकर भेड़फाटक तक चले, और पहरुओं के फाटक के पास खड़े हो गए।

उत्सव समारोह में दो बड़े जलूस सम्मिलित थे जो संभवतः शहरपनाह के दक्षिण पश्चिमी भाग में घाटी फाटक से आरंभ हुए (देखें 2:13, 15; 3:13)। पहला जलूस, एज्रा के नेतृत्व में शहरपनाह के वामावर्त दिशा में चला। दूसरा जलूस, नहेम्याह के नेतृत्व में, शहरपनाह के दक्षिणावर्त दिशा में चला। दोनों जलूस यरूशलेम के पूर्वी भाग की ओर चले और मंदिर के प्रांगण में मिले।

आयतें 31-37. समर्पण में दो गतिविधियां सम्मिलित थीं। नहेम्याह, फिर से प्रथम-व्यक्ति में कहते हुए, स्पष्ट करता है कि **दो बड़े दल ठहराए** गए (12:31)। "दल" (תּוֹדָה, *थोदाह*) के लिए इब्रानी शब्द का शब्दार्थ है "धन्यवाद करने वाले दल।" इन दलों को विपरीत दिशाओं में **शहरपनाह पर चढ़ाकर** चलना था, इनके पीछे लोगों के अगुवे, याजक, और लेवी थे। नहेम्याह की शहरपनाह के एक भाग, जिसकी खुदाई कैथलीन एम. केनयन ने की, उसकी चौड़ाई नौ फुट थी, जो यह दिखाता है कि शहरपनाह वास्तव में इतनी चौड़ी थी कि उसपर चला जा सके।[17] और अधिक निकट समय में ऐलात मज़ार ने नहेम्याह की शहरपनाह के एक भाग को अनावृत किया (जो एक पहले से विद्यमान ढाँचे के साथ जुड़ता है) जो कि सोलह फुट चौड़ा था।[18] अन्ततः दोनों जलूस मंदिर में आकर मिलते, जहाँ स्तुति और आराधना की जाती।

दो दलों के बनाए जाने के बारे में बताने के बाद, नहेम्याह ने पहले दल को बनाने वाले लोगों का विवरण और प्रगति को बताया। इस जलूस का नेतृत्व **एज्रा शास्त्री** कर रहा था (12:36)। उसके पीछे गाने वालों की एक टोली थी। उस टोली के पीछे **होशायाह, और यहूदा के आधे हाकिम** (12:32), याजकों के परिवारों के कुछ मुखिया (12:33, 34), **और याजकों के कितने पुत्र तुरहियाँ लिये हुए**, और कुछ लेवी, जिनमें वे भी थे जो **परमेश्वर के भक्त दाऊद के बाजे लिये हुए थे** (12:35, 36)। वे शहरपनाह पर वामावर्त दिशा में चले, **कूड़ाफाटक** (12:31) से होते हुए शहर के दक्षिणी छोर, और **सोताफाटक** (12:37) से दक्षिणपश्चिमी शहरपनाह से गए। अन्ततः वे शहर के **पूरब की ओर जलफाटक तक पहुँचे** (12:37)। उस क्षेत्र से वे मंदिर के प्रांगण तक पहुँचे।

आयतें 38, 39. दूसरा दल विपरीत दिशा में चला, पश्चिमी शहरपनाह पर दक्षिणावर्त दिशा में चला। गाने वालों की टोली के पीछे नहेम्याह **और आधे लोग** चले। जलूस **भट्ठों के गुम्मट के पास से चौड़ी शहरपनाह तक, और एप्रैम के फाटक और पुराने फाटक** से होकर निकला। उत्तरी शहरपनाह की ऊपर चलते हुए वे **मछलीफाटक, हननेल के गुम्मट, और हम्मेआ नामक गुम्मट** और **भेड़फाटक तक चले**। अन्ततः वे **पहरुओं के फाटक के पास** शहर के उत्तरपूर्वी किनारे पर आए और मंदिर के प्रांगण में आ गए।[19]

[40]तब धन्यवाद करनेवालों के दोनों दल और मैं और मेरे साथ आधे हाकिम परमेश्वर के भवन में खड़े हो गए; [41]और एल्याकीम, मासेयाह, मिन्यामीन, मीकायाह, एल्योएनै, जकर्याह और हनन्याह नामक याजक तुरहियाँ लिये हुए थे। [42]मासेयाह, शमायाह, एलीआज़ार, उज्जी, यहोहानान, मल्किय्याह, एलाम, और एजेर (खड़े हुए थे) और गवैये जिनका मुखिया यिज्रह्याह था, वह ऊँचे स्वर से गाते बजाते रहे। [43]उसी दिन लोगों ने बड़े बड़े मेलबलि चढ़ाए, और आनन्द किया; क्योंकि परमेश्वर ने उनको बहुत ही आनन्दित किया था; स्त्रियों ने और बाल-बच्चों ने भी आनन्द किया। यरूशलेम के आनन्द की ध्वनि दूर दूर तक फैल गई।

आयतें 40-43. दोनों जलूस अन्ततः **परमेश्वर के भवन** में, मंदिर में मिले और **खड़े हो गए** (12:40)। जो अन्य वहाँ उपस्थित थे, वे नहेम्याह तथा याजकों के साथ आए **आधे हाकिम** थे। कुछ याजकों ने समारोह में **तुरहियाँ लिये हुए** भाग लिया (12:41, 42)।

दलों के एकत्रित होने के पश्चात, गवैये, मुखिया के साथ, गाते बजाते रहे (12:42)। "गाते बजाते" का शब्दार्थ है "उन्होंने अपने स्वरों को सुनने योग्य किया।" **उसी दिन लोगों ने बड़े बड़े मेलबलि चढ़ाए, और सभी ने - स्त्रियों ने और बाल-बच्चों ने भी, आनन्द किया**; क्योंकि परमेश्वर ने उनको बहुत ही आनन्दित किया था (12:43)। वास्तव में, जैसे कि तब जब मंदिर की नींव रखी गई थी, यहूदियों के आनन्द की ध्वनि दूर दूर तक फैल गई (12:43; देखें एज्रा 3:11-13)।

अवसर की सराहना करने के लिए हमें उन दोनों बड़े जलूसों की कल्पना करनी चाहिए, शहरपनाह के ऊपर परमेश्वर की स्तुति करने वालों की टोलियों के पीछे लोग चल रहे हैं। याजक तुरहियां फूंक रहे हैं, और लेवीय संगीत वाद्य बजा रहे हैं। दोनों दल शहरपनाह से उतरकर मंदिर की ओर चले जहाँ जाकर वे मिल गए। वहाँ गाने वालों की दोनों टोलियाँ मिलकर एक हो गईं, और उन्होंने एक नेतृत्व में परमेश्वर की स्तुति और उपासना के सुन्दर गीतों को गाया। परमेश्वर की स्तुति करने में मण्डली के सभी लोग उनके साथ सम्मिलित हुए। वह दृश्य अद्भुत था: हज़ारों लोग एक साथ गाते, आनंद मनाते, परमेश्वर की स्तुति करते हुए! वह ध्वनि अद्भुत रही होगी: आवाजों का सुन्दर मिश्रण जो सारे शहर और उससे बाहर भी सुना जा सकता था! परमेश्वर के लोग होने के नाते, हमें जब भी इस बात का बोध हो कि परमेश्वर ने हमें कितना आशीषित किया है, हमारी प्रतिक्रिया ऐसी ही होनी चाहिए!

याजकों और लेवियों के लिए प्रावधान (12:44-47)

[44]उसी दिन खज़ानों के, उठाई हुई भेंटों के, पहली पहली उपज के, और

दशमांशों की कोठरियों के अधिकारी ठहराए गए, कि उनमें नगर नगर के खेतों के अनुसार उन वस्तुओं को जमा करें, जो व्यवस्था के अनुसार याजकों और लेवियों के भाग में की थीं; क्योंकि यहूदी उपस्थित याजकों और लेवियों के कारण आनन्दित थे। 45इसलिये वे अपने परमेश्वर के काम और शुद्धता के विषय में चौकसी करते रहे; और गवैये और द्वारपाल भी दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान की आज्ञा के अनुसार वैसा ही करते रहे। 46प्राचीनकाल, अर्थात् दाऊद और आसाप के दिनों में तो गवैयों के प्रधान थे, और परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद के गीत गाए जाते थे। 47जरुब्बाबेल और नहेम्याह के दिनों में सारे इस्राएली, गवैयों और द्वारपालों के प्रतिदिन का भाग देते रहे; और वे लेवियों के अंश पवित्र करके देते थे; और लेवीय हारून की सन्तान के अंश पवित्र करके देते थे।

लेखक ने अध्याय को तब तक समाप्त नहीं किया जब तक उसने बता नहीं दिया कि कैसे लोगों के दशमांश और भेंटों को याजक और लेवियों द्वारा उपयोग के लिए प्रयोग किया जाता था। उसने बल दिया कि उनके कार्य के महत्व के कारण वे उन भेंटों के योग्य थे।

आयतें 44-47. याजकों और लेवियों पर दिया गया बल जारी रहा। लेखक ने अध्याय का आरंभ इस्राएल के धार्मिक जीवन के अगुवों की पहचान करवाने और फिर यरूशलेम की शहरपनाह के समर्पण में उनकी भूमिका के बारे में बताने के साथ किया। फिर वह उनके दायित्वों से उनके प्रतिफलों की ओर मुड़ा। उनका ध्यान कैसे रखा जाता था जिससे कि वे अपने परिवारों की देख-भाल कर सकें?

उसी दिन जब शहरपनाह का समर्पण हुआ, **कोठरियों के अधिकारी ठहराए गए** जहाँ **वस्तुओं को** रखा जाता था। ये व्यक्ति यह सुनिश्चित करने के लिए थे कि वे वस्तुएँ जो **व्यवस्था के अनुसार** आवश्यक थीं, उन्हें मंदिर में जमा किया जाए और वे न तो खोएं और न उनका दुरुपयोग होने पाए। इन भेंटों की विशेष देख-भाल के लिए जो कारण दिया गया वह था **क्योंकि यहूदी उपस्थित याजकों और लेवियों के कारण आनन्दित थे** (12:44)।

लेखक ने विवरण दिया कि क्यों लोग उनके धार्मिक अगुवों की सराहना करते थे: **वे अपने परमेश्वर के काम और शुद्धता के विषय में चौकसी करते रहे**; साथ ही **गवैये और द्वारपाल भी दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान की आज्ञा के अनुसार वैसा ही करते रहे** (12:45), जैसा कि प्राचीनकाल (12:46) में किया जाता था। यहाँ "प्राचीनकाल" से तात्पर्य है "दाऊद और आसाप के दिन।" दाऊद के दिनों में, आसाप गवैयों का अधिकारी था और परमेश्वर की स्तुति के लिए गीत उपलब्ध करवाना उसका दायित्व था।[20] इसी लिए कई भजनों के शीर्षक में "आसाप" नाम पाया जाता है।

अध्याय की अंतिम आयत **जरुब्बाबेल के दिनों** को नहेम्याह के दिनों से जोड़ती है। दोनों ही व्यक्तियों ने **गवैयों** और **द्वारपालों** की देख-भाल के लिए योगदान दिया था (12:47) यह सुनिश्चित करने के द्वारा कि लेवियों को उनका भाग मिलता रहे, और प्रत्युत्तर में फिर वे याजकों को उनका अंश देते थे।

याजक और लेवी वही कर रहे थे जो "प्राचीनकाल" में, दाऊद की आज्ञा के अनुसार किया जाता था। उनका कार्य प्रशंसनीय था और इस्राएली उसे महत्व देते थे। जो मंदिर में सेवा करते थे उनके लिए प्रावधान करना आवश्यक था; और प्रांत के अधिपति (प्रारंभिक दिनों से लेकर वर्तमान तक) इस बात को सुनिश्चित करते थे कि लोग वह दे रहे हैं जिसकी आज्ञा इस उद्देश्य के लिए दी गई है।

अनुप्रयोग

प्रभावी नेतृत्व: उद्देश्य पर ध्यान (अध्याय 12)

एक प्रभावी अगुवा उद्देश्य पर ध्यान रखना प्रदर्शित करता है। नहेम्याह ऐसा ही अगुवा था। जब, अध्याय 6 में, यहूदियों के शत्रुओं ने उसे निमंत्रण दिया कि वह आकर उनसे ओनो के मैदान में मिले, तो उसने प्रत्युत्तर दिया, "मैं तो भारी काम में लगा हूँ, वहां नहीं जा सकता; मेरे इसे छोड़ कर तुम्हारे पास जाने से वह काम क्यों बन्द रहे?" (6:3)। नहेम्याह जिसे अत्याधिक महत्व का समझता था उसे करने में बहुत व्यस्त था, इसलिए उसने उसे निमंत्रण को अस्वीकार कर दिया। ऐसा करने के द्वारा, उसने एक गुण प्रदर्शित किया जो लगभग प्रत्येक प्रभावी अगुवे में पाया जाता है: उद्देश्य पर ध्यान लगाए रखना।

एक वास्तव में प्रभावी अगुवा जानता है कि उसे क्या करने के लिए बुलाया गया है: वह अपने प्रमुख कार्य को पहचानता है और उसे पूरा करने के लिए अपना सब कुछ उसमें लगा देता है। एक प्रभावी बास्केटबॉल प्रशिक्षक ध्यान रखता है कि उसका कार्य है कि यथासंभव अधिक से अधिक खेल जीते। एक संपन्न व्यवसायी लक्ष्य रख सकता है कि वह अधिक से अधिक धन कमाएगा। एक राजनीतिज्ञ चुनाव जीतने के लिए जो भी आवश्यक हो वह करने के लिए तैयार हो सकता है। कोई भी अगुवा किसी भी योग्य और भला लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल नहीं होगा यदि वह उद्देश्य पर ध्यान लगाए न रखे।

समाज दृढ़ संकल्प होकर उद्देश्य पर ध्यान लगाए रखने वाले अगुवों के प्रति बहुत कुछ करने के लिए ऋणी है। क्या हो जाता यदि अमेरिका के गृह युद्ध के समय अमेरिका के राष्ट्रपति, अब्राहम लिंकन, प्रान्तों की एकता को बनाए रखने के प्रति कटिबद्ध न होते? लिंकन इस उद्देश्य पर दृढ़ थे, और इस पर उनके निरन्तर बने हुए ध्यान ने ही अन्ततः राष्ट्र को सुरक्षित रखा। विंस्टन चर्चिल द्वारा, दूसरे विश्व युद्ध में, दृढ़ निर्णय के साथ नाज़ियों का प्रतिरोध करने के कारण ही इंग्लैण्ड विपत्ति की घड़ी में बच सका। महात्मा गांधी ने अपना जीवन, शांतिपूर्ण सामाजिक अवज्ञा नीति के द्वारा, भारत को स्वतंत्र करवाने के लिए समर्पित कर दिया। अन्ततः दृढ़ संकल्प के साथ अपने सिद्धांतों पर ध्यान लगाए रखने के कारण वे अपने उद्देश्य में सफल हुए।

इसी प्रकार से नहेम्याह ने भी उद्देश्य के प्रति दृढ़ निश्चय को दिखाया। उसका उद्देश्य था यरूशलेम की शहरपनाह का पुनः निर्माण (2:5, 17)। उसने अपने इस एक उद्देश्य की पूर्ति के मध्य अन्य किसी बात को नहीं आने दिया। वह इसके लिए

राजा से आज्ञा लेने से नहीं घबराया। कठिन यात्रा का विचार उसके मन को बदल नहीं सका। जब उसने ध्वस्त हो गई शहरपनाह को देखा या विरोध का सामना किया तो उसने कार्य को छोड़ नहीं दिया। उसे अपने दल से बाहर शत्रुओं का सामना करना पड़ा - जिन्होंने कार्य को रोकने के लिए हर संभव प्रयास किया - साथ ही उसे अपने दल में से कुछ के धोखे का भी सामना करना पड़ा। वह एक उद्देश्य उसके जीवन पर छाया रहा और वह उसे सफलता पूर्वक कर सका। लोगों ने इस उपलब्धि को बड़ी धूम-धाम के साथ मनाया जब उन्होंने यरूशलेम की पुनः निर्मित शहरपनाह का समर्पण किया (12:27-43)।

यीशु ने भी अपने आप को एक ही लक्ष्य की पूर्ति के लिए दे दिया। यीशु ने कहा कि उनका लक्ष्य था कि अपने पिता की इच्छा को पूरा करें (यूहन्ना 6:38)। वे "खोए हुओं को ढूंढने और उन का उद्धार करने" (लूका 19:10) तथा "बहुतों की छुडौती के लिये अपने प्राण देने" (मत्ती 20:28) के लिए आए थे। यह दृढ़ निश्चय उद्देश्य उन्हें क्रूस तक ले गया, जहाँ उन्होंने शैतान पर विजय प्राप्त की और मनुष्यों के लिए स्वर्ग के द्वार खोल दिए।

एक अन्य दृढ़ संकल्प वाला व्यक्ति था पौलुस, जिसने लिखा, "हे भाइयों, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं: परन्तु केवल यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ। निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिस के लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है" (फिलि. 3:13, 14)। पौलुस ने भिन्न समयों पर कई कार्य किए थे, परन्तु वे सभी इस अभिप्राय से थे, और उनका एक ही उद्देश्य था कि उसे उसके जीवन के उस "एक उद्देश्य" को पूरा करवाएँ: यीशु मसीह के "निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं!"

प्रभावी अगुवे पौलुस के समान होते हैं; वे भिन्न समयों पर भिन्न कार्य कर सकते हैं, परन्तु जो भी वे करते हैं वह एक ही उद्देश्य की पूर्ति के लिए होता है: अपनी अगुवाई के द्वारा उस "एक बात" को पूरा करना जिसके लिए वे दृढ़ निश्चय हैं।

मसीह के लिए जो अगुवे हैं उनका भी, अन्य सभी मसीहियों के समान, प्रमुख उद्देश्य स्वयं स्वर्ग जाना तथा अपने साथ जितने अधिक हो सकें उतने लोगों को लेकर जाना होता है। किन्तु वे औरों को निर्देशित या उनका मार्गदर्शन करते हैं, इसलिए उन्हें उन उद्देश्यों पर ध्यान देना चाहिए जो वे अगुवे होने के नाते पूरे करना चाहते हैं। जो लक्ष्य वे अपने तथा मण्डली के लिए, जिसकी अगुवाई करने में वे सहायता करते हैं, रखते हैं, वे न केवल महत्वाकांक्षी होने चाहिए, वरन यथार्थवादी भी होने चाहिए। उन्हें मण्डली की परिस्थितियों - उनकी सामर्थ्य और दुर्बलता को, उसकी समस्याओं और क्षमताओं को ध्यान में रखना चाहिए - किन्तु साथ ही जब उसकी सामर्थ्य हम में होकर कार्य करती है तब हमारी अपेक्षा से बढ़कर करने की प्रभु की योग्यता को पहचानना चाहिए (इफि. 3:20)।

एक बार अगुवा निश्चय कर ले कि वह क्या करना चाहता है - या उसका क्या विश्वास है कि परमेश्वर उससे करवाना चाहता है - उसे पूरे मन से उस उद्देश्य की

पूर्ति के लिए कार्य करना चाहिए। उसे लक्ष्य की ओर केंद्रित मनुष्य होना चाहिए। नहेम्याह के समान उसे किसी भी बात को उसके ध्यान को लक्ष्य से हटाने या निराश नहीं करने देना चाहिए। उसके उद्देश्य को उसके जीवन पर हावी रहना चाहिए।

निःसंदेह, उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जो लक्ष्य उसके कार्यकारी जीवन को स्वरूप दे रहा है तथा उसके कार्यों को निर्धारित करता है वह उचित हो। साथ ही उसे केवल भली विधियों को ही अपने प्रयासों के लिए प्रयोग करना चाहिए। एक बार उसने अपना ध्यान अपने उस लक्ष्य की ओर केंद्रित कर लिया जिस ओर वह औरों की अगुवाई करना चाहता है, उसे अपना सब कुछ उसे पूरा करने के लिए लगा देना चाहिए और उस लक्ष्य तक पहुँचने में किसी बात को बाधा नहीं बनने देना चाहिए।

उपसंहार। ऐसा लगभग कुछ भी नहीं है जो आकस्मिक हो जाए। प्रभावी अगुवे अपने लक्ष्यों को जानते हैं, और वे उन्हें पूरा करने के लिए दृढ़-संकल्प रहते हैं।

समाप्ति नोट्स

[1]"किन्समेन/स्वजन" का शब्दार्थ "भाई" है। [2]जोसेफस *एंटीक्विटीस* 7.14.7. डेरेक किडनर ने दो संभव स्पष्टीकरण दिए उस संख्या तथा इस अध्याय में मिलने वाले बाईस नामों के मध्य प्रतीत होने वाली विसंगति के लिए: (1) "प्रतिलिपि बनाने में दो नाम छूट गए, जैसे कि वर्तमान सूची में से एक नाम (हत्तूश, आयत 2) आयातों 12-21 में फिर से नहीं आया है।" (2) "यह संभव है कि संपूर्ण [कार्यकर्ता] सूची उस समय तक पुनःस्थापित नहीं हुई थी।" (डेरेक किडनर, *एज्रा एण्ड नहेम्याह,* द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीस [डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इन्टर-वर्सिटी प्रैस, 1979], 122)। [3]"येहोहनान" नामक एक महायाजक का उल्लेख एलिफेंटाईन पेपराई में आया है (लगभग 407 ई.पू.)। (बेज़लेल पोर्टेन, अनुवादक, "रिक्वेस्ट फॉर लेटर ऑफ रिकमंडेशन," में *द कॉन्टेक्स्ट ऑफ स्क्रिप्चर,* एडिटर विलियम डब्ल्यू. हैल्लो [बॉस्टन: ब्रिल, 2003], 3:128.) [4]जोसेफस *एंटीक्विटीस* 11.8.2, 4-5. [5]कियथ एन. शोविल्ले ने यह मान लिया कि सूची में दिया गया "यद्दू" वही व्यक्ति है जिसका उल्लेख जोसेफस ने किया है। उसने उसके नाम को "इस सूची में बाद में डाला गया नाम" माना और कहा कि "यह भी संभव है कि सूची से कुछ नाम छूट गए हैं" (कियथ एन. शोविल्ले, *एज्रा-नहेम्याह,* द कॉलेज प्रैस NIV कॉमेंट्री [जोपलिन, मिसौरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग को., 2001], 248). [6]वर्तनी में अन्तर तीन श्रेणियों के अन्तर्गत आते हैं: (1) नाम के साथ एक अतिरिक्त अक्षर जोड़ा गया; (2) समान प्रतीत होने वाले इब्रानी अक्षरों में भ्रांति हुई; या (3) दो अक्षरों क्रम बदल गया। [7]एफ. चार्ल्स फेनशैम, *द बुक्स ऑफ एज्रा एण्ड नहेम्याह,* द न्यू इंटरनैशनल कॉमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1982), 252. [8]एच. जी. एम. विलियमसन, *एज्रा, नहेम्याह,* वर्ड बिबलिकल कॉमेन्ट्री, वोल. 16 (वाको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1985), 365. [9]यहाँ उल्लेखित "वृतांतों" को पुराने नियम में पाई जाने वाली 1 और 2 इतिहास की पुस्तकों के साथ भ्रमित नहीं करना चाहिए। [10]फेनशैम, 253.

[11]उपरोक्त। [12]किडनर, 125. [13]रूबेन रैट्ज़लैफ और पौल टी. बटलर, *एज्रा, नहेम्याह एण्ड एस्तेर,* बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज़ (जोपलिन, मिसौरी: कॉलेज प्रैस, 1979), 235. [14]कितना समय बीता - शहरपनाह के पूरे होने से लेकर उसके समर्पण होने तक - लेख में नहीं दिया गया है। समय कम ही होने की संभावना है, हो सकता है कि कुछ ही महीने। इसकी संभावना बहुत ही कम है कि बारह वर्ष या अधिक समय लग गया होगा, जैसा कि कुछ का मानना है। [15]विलियम डी.

मौउन्स, "नेतोपाह," में *द इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल एन्साइक्लोपीडिया*, रिव. एड., एड. ज्योफ्रे डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1986), 3:526. [16]जोसेफ ब्लेनकिनसौप, *एज्रा-नहेम्याह*, द ओल्ड टेस्टामेंट लाईब्रेरी (फिलेडेल्फिया: वेस्टमिनिस्टर प्रैस, 1988), 344. [17]कैथलीन एम. केन्यन, *जेरुसलेम: एक्सकवेटिंग 3000 ईयर्स ऑफ हिस्ट्री* (न्यू यॉर्क: मैकग्रौ-हिल बुक को., 1967), 111. [18]ऐलत मज़ार, "द वॉल दैट नहेम्याह बिल्ट," *बिबलिकल आर्कियोलॉजी रीविय्यू* 35, न. 2 (मार्च-एप्रैल 2009): 30. [19]इनमें से अधिकांश स्थानों के विषय चर्चा अध्याय 3 की टिप्पणियों में की गई है। [20]लेस्टर ई. ग्रैबे, *एज्रा-नहेम्याह*, ओल्ड टेस्टामेंट रीडिंग्स (न्यू यॉर्क: रौउट्लेज, 1998), 63.